टॉपी ने घर चुना

एक बार की बात है। मैं और मेरी सबसे प्यारी दोस्त रितु उसके घर की छत पर खड़े होकर सड़क पर देख रहे थे। रितु के घर के सामने एक बढ़ई की दुकान थी। वह बढ़ई और उसके दो-तीन नौकर दुकान पर लकड़ियों से पलंग, टेबल, कुर्सी आदि बना रहे थे। तभी हमारी नज़र उस दुकान में रखे एक लकड़ी के डिब्बे पर गई और मज़े की बात यह है कि उस डिब्बे में एक छोटा-सा, प्यारा-सा भूरे रंग का कुत्ते का एक बच्चा सो रहा था। ऐसा लग रहा था कि वो एक प्यारा-सा सपना देख रहा है। मुझे और रितु को उसे देखकर बहुत अच्छा लग रहा था इसलिए हमने उसका नाम टॉपी रख दिया। जब बढ़ई की नज़र टॉपी पर पड़ी तो उसने टॉपी को लात मारकर उठाया। हमें बहुत बुरा लगा। उस लड़के ने टॉपी को उठाकर सड़क के दूसरे किनारे छोड़ दिया और फिर वह अपना काम करने लगा। पर कुछ देर बाद जब देखा तो टॉपी फिर से उस डिब्बे में आ चुका था। ऐसा लगा कि टॉपी बिल्कुल ये नहीं चाहता कि उसे उस डिब्बे से अलग किया जाए। पर उस लड़के को तो अपना काम करना था। उसने फिर से टॉपी को उठाया और वापस उसी जगह छोड़ आया। पर टॉपी कहाँ उस डिब्बे को छोड़ने वाला था। वह फिर से उस डिब्बे के अन्दर जा बैठा।

- शिवम, चौथी, होशंगाबाद, म. प्र.

लड़के ने सोचा कि थोड़ी देर इसे बैठे रहने देते हैं यह अपने आप ही चला जाएगा। पर टॉपी वहाँ से नहीं गया। अब लड़के को थोड़ा गुस्सा आया। वह टॉपी को कम से कम आधा किलोमीटर दूर छोड़कर आया। जब वह टॉपी को ले जा रहा था तब ऐसा लग रहा था कि टॉपी लड़के से कहना चाह रहा हो कि "तुम मुझे यहाँ से नहीं निकाल सकते। मैं इस डिब्बे को अपना घर मान चुका हूँ।" और लड़का टॉपी से कह रहा हो कि, "कुत्ते के बच्चे दुबारा यहाँ मत आना। दुबारा आया तो अच्छी मरम्मत कर दूँगा। हमें क्या कुत्ते वाला समझा है। हमारी ही दुकान मिली थी क्या तुझे?" यह सब मैं और रितु बड़े ध्यान से देख रहे थे। हमें यह देखकर मज़ा आ रहा था कि टॉपी अपना घर नहीं छोड़ना चाहता। बहुत देर हो गई थी इसलिए मैं और रितु अन्दर पानी पीने चले गए। जब हम पानी पीकर आए तो देखा कि जब वह लड़का टॉपी को छोड़कर आ रहा था तो टॉपी उसके पीछे-पीछे वापस उसकी दुकान में रखे डिब्बे में आ बैठा। यह देखकर हमें बहुत अच्छा लगा। वह लड़का भी हँसने लगा। रात हो गई तो मैंने रितु से कहा कि अब मैं घर जा रही हूँ। मैं साइकिल से घर आ रही थी तो रास्ते में मैं टॉपी के बारे में ही सोच रही थी। रास्ते में जो भी कुत्ता दिख रहा था। उससे कहने को मन कर रहा था कि टॉपी ने तो अपना घर चुन लिया तुम भी घर ढूँढना शुरू कर दो।

- पद्मजा उर्फ गुनगुन, राजस्थान

- कार्तिक तिवारी, पाँच साल, इन्दौर

एक बार की बात

एक बार की बात है। मैं अपने रिश्तेदार के साथ एक जगह गया। फिर हम जंगल में पहुँच गए। और हमनें एक घर देखा। हम गेट के पास गए। वहाँ एक चौकीदार था। उसने कहा कि अन्दर भूत है। हम डर गए। फिर जब चौकीदार सो गया तो हम अन्दर गए। फिर हम भूत से मिले। कुछ भूत बहुत मज़ेदार थे और कुछ शरारती थे। और कुछ तो हमारे दोस्त बन गए। और हमने बहुत मज़े किए।

-शिवानी उनाकर, 7 साल, जगह नहीं लिखी

-कृपाली और आयुषी, पता नहीं लिखा

मेरा पन्ना

राजा का सोफा

राजा के सोफे पे
बैठे तीन बन्दर,
कर रहे थे टीवी चालू
देख रहे थे हाथी भालू!

– प्रमोद यादव, चौथी, होशंगाबाद

बात है बहुत पुरानी

बात है बहुत पुरानी
सुन लोगे तो आ जाएगा मुँह में पानी।
पेड़ों पर आम लगे थे।
हम उसके नीचे खड़े थे।
इतने में हवा का झोंका आया
आम तुरन्त नीचे आया।
इतने में मैंने उसे पाया
तुरन्त मुँह में पानी आया।
धोकर मैंने उसे खाया
खाने में बड़ा मज़ा आया।

– अशोक कुमार, छटीं, कानपुर, उ. प्र.